कतर गैस प्लांट हादसा : 12 भारतीयों सहित 13 की जान गई, 66 घायलों की हालत स्थिर, मेंटेनेंस के बाद दो दिन पहले ही खोला गया था प्लांट

दोहा

रास लाफ़ान इंडस्ट्रियल सिटी में बरज़ान लोकल गैस सप्लाई फैसिलिटी में रविवार को हुए भीषण धमाके से 12 भारतीयों सहित 13 लोगों की मौत हो गई और 66 लोग घायल हो गए। भारतीय दूतावास के अनुसार, दुर्घटना में घायल हुए अन्य लोगों की स्थिति फिलहाल स्थिर है और उनका उपचार किया जा रहा है। दूतावास ने यह भी बताया कि मृतकों के पार्थिव शरीरों को शीघ्र भारत भेजने की प्रक्रिया को लेकर संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय किया जा रहा है। खास बात यह है कि बरज़ान प्लांट को ज़रूरी मेंटेनेंस के लिए दिसंबर 2025 से बंद रखा गया था और धमाके से सिर्फ़ दो दिन पहले ही इसे दोबारा शुरू किया गया था।

राजधानी दोहा से 80 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में नार्थ फील्ड के पास स्थित रास लाफ़ान इंडस्ट्रियल सिटी कतर के सबसे अहम औद्योगिक केंद्रों में से एक है, जहाँ लगभग 1,15,000 लोग काम करते हैं।

वेबसाइट कतर न्यूज के मुताबिक ऊर्जा मामलों के राज्य मंत्री और कतर एनर्जी के प्रेसिडेंट और सीईओ साद शेरिदा अल-काबी ने सोमवार को हादसे की पुष्टि करते हुए दोहा में प्रेस कान्फ्रेंस में बताया कि धमाका रविवार, 21 जून को रात करीब 10:30 बजे हुआ। उन्होंने साफ किया कि यह एक हादसा था, न कि कोई तोड़-फोड़ या दुश्मनी की वजह से हुई घटना।

उन्होंने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि मारे गए लोगों में भारतीय और पाकिस्तानी नागरिक थे। उन्होंने बताया कि घायल हुए 66 लोगों में से किसी की भी हालत जानलेवा नहीं है। घायलों में कतर, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, केन्या, ईरान, तंजानिया, नाइजीरिया और नेपाल के नागरिक हैं। अल-काबी ने बताया कि बरज़ान प्लांट को ज़रूरी मेंटेनेंस के लिए दिसंबर 2025 से बंद रखा गया था और धमाके से सिर्फ़ दो दिन पहले ही इसे दोबारा शुरू किया गया था। कतर एनर्जी की इमरजेंसी रिस्पान्स टीम और कतर सिविल डिफेंस ने तेज़ी से आग पर काबू पा लिया। घटना की वजह का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है।

कतर एनर्जी के अनुसार, 2022 में शुरू हुए बरज़ान काम्प्लेक्स से घरेलू स्तर पर पाइपलाइन गैस की सप्लाई होती है। इसमें स्थानीय बिजली उत्पादन और पानी को खारापन मुक्त करने वाले (डिसैलिनेशन) प्लांट के साथ-साथ स्थानीय उद्योगों को हर दिन 1.4 बिलियन स्टैंडर्ड क्यूबिक फ़ीट गैस सप्लाई करने की क्षमता है। यह फैसिलिटी स्थानीय बाजार और एक्सपोर्ट, दोनों के लिए इथेन, कंडेनसेट और सल्फर जैसे हाइड्रोकार्बन प्रोडक्ट भी सप्लाई करती है।

न्यूज़ ब्रीफ

पत्नी ने खोले जेडी वेंस के कई राज पाडकास्ट में किया बड़ा खुलासा

वाशिंगटन। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने हाल ही में फादर्स डे के खास मौके पर एक बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने अपनी पत्नी उषा वेंस के लोकप्रिय पाडकास्ट स्टोरीटाइम विद द सेकेंड लेडी में बताया कि वे अपने बच्चों को विदेशी दौरों पर क्यों साथ ले जाते हैं। वेंस ने स्पष्ट किया कि इसका मुख्य उद्देश्य अपने बच्चों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों और विभिन्न देशों के नेताओं से परिचित कराना है, ताकि वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य को समझ सकें। इस विशेष पाडकास्ट एपिसोड में, जेडी वेंस एक खास मेहमान के तौर पर शामिल हुए थे, जहाँ उन्होंने अपनी सार्वजनिक जिम्मेदारियों, पारिवारिक जीवन और बच्चों के साथ बिताए गए अनमोल पलों के बारे में दिलचस्प बातें साझा कीं। उन्होंने उपराष्ट्रपति के रूप में अपनी अहम जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला, जैसे कि अमेरिकी सीनेट में किसी मुद्दे पर वोटों के बराबर होने की स्थिति में निर्णायक वोट देना, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण यात्राएं करना। इन यात्राओं के दौरान बच्चों को साथ ले जाने का उनका निर्णय उन्हें एक जिम्मेदार पिता के रूप में भी प्रस्तुत करता है, जो अपने बच्चों की शिक्षा और अनुभव को महत्व देते हैं। बातचीत के दौरान, वेंस ने मुस्कुराते हुए बताया कि उन्हें बच्चों को कहानियां सुनाना बहुत पसंद है। हालांकि, जैसे-जैसे बच्चे बड़े हो रहे हैं, वे खुद किताबें पढ़ने लगे हैं और अब मम्मी-पापा से उतनी कहानियां नहीं सुनना चाहते।

आचार संहिता उल्लंघन करने वाले मीडिया और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को नेपाल प्रेस काउन्सिल की चेतावनी

काठमांडू। नेपाल प्रेस काउन्सिल ने पत्रकार आचार संहिता के विपरीत गतिविधियां और सामग्री प्रसारित करने वाले मीडिया संस्थानों, पत्रकारों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सख्त चेतावनी दी है। प्रेस काउन्सिल ने मंगलवार को सभी से आचार संहिता की सीमा में रहकर जिम्मेदारी के साथ सामग्री प्रसारित करने और करवाने की अपील की है।काउन्सिल ने कहा कि हाल के दिनों में कुछ मीडिया संस्थानों, पत्रकारों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की पेशागत आचरण और मर्यादा के विपरीत गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। काउन्सिल के अनुसार कई आनलाइन समाचार पोर्टल पंजीकरण तो करा रहे हैं, लेकिन समाचार सामग्री प्रकाशित करने के बजाय यूट्यूब चैनल, फेसबुक पेज और रील्स के माध्यम से केवल व्यूज और मोनेटाइजेशन पर केंद्रित तथ्यहीन, झगड़ालू और गाली-गलौज वाली सामग्री प्रसारित कर रहे हैं। काउन्सिल ने यह भी कहा कि बिना अनुमति और पत्रकार परिचयपत्र के विभिन्न सरकारी कार्यालयों, शैक्षिक संस्थानों और कार्यक्रमों में प्रवेश कर अमर्यादित व्यवहार करने, दुर्व्यवहार और विवाद पैदा करने की घटनाएं बढ़ रही हैं। इतना ही नहीं, हाथापाई और विवाद के वीडियो सोशल मीडिया पर सार्वजनिक करने की प्रवृत्ति भी तेजी से बढ़ रही है।

नासा का खास टेलीस्कोप पृथ्वी की ओर खिंच रहा, इसे बचाने जाएगा रोबोटिक यान

वाशिंगटन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का स्विफ्ट स्पेस आब्जर्वेटरी, जो पिछले दो दशकों से ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली विस्फोटों और रहस्यमयी घटनाओं का अध्ययन कर रहा है, अब खतरे में है। साल 2004 में लान्च किया गया यह अंतरिक्ष दूरबीन धीरे-धीरे अपनी कक्षा खो रहा है और पृथ्वी की ओर खिंच रहा है। यदि समय रहते इसे बचाया नहीं गया तो यह साल 2026 के आखिर तक पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश कर जलकर नष्ट हो सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस खतरे को देखते हुए नासा ने स्विफ्ट बूस्ट मिशन नामक एक विशेष बचाव अभियान शुरू किया है। इस मिशन के तहत एरिजोना स्थित कैटलिस्ट स्पेस टेक्नोलाजीज द्वारा विकसित लिंक नामक अंतरिक्ष यान को स्विफ्ट तक भेजा जाएगा। यह यान स्विफ्ट के पास पहुंचकर उससे जुड़ेगा और उसे दोबारा ऊंची और सुरक्षित कक्षा में ले जाकर स्थापित करेगा।

अमेरिका-ईरान समझौता : 300 अरब डालर का निवेश, शर्तों के साथ ईरान का नया आर्थिक अध्याय

तेहरान

करीब चार दशकों के अमेरिकी प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद, ईरान के लिए बड़े आर्थिक मोड़ की संभावना पैदा हुई है। अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते के बाद, 300 अरब डालर के एक प्रस्तावित फंड की चर्चा जोर पकड़ रही है, जो कई छोटे देशों की पूरी अर्थव्यवस्था से भी बड़ी रकम है। यह राशि ईरान की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती है, लेकिन इसके पीछे की कहानी उतनी सीधी नहीं है जितनी दिखती है। यह मामला पहली नजर में जितना सीधा दिखता है, उतना है नहीं। अमेरिका स्पष्ट कर चुका है कि यह ईरान को सीधे कैश पेमेंट या मुआवजा नहीं है। अमेरिकी अधिकारियों ने साफ किया है कि यह 300 अरब डालर का चेक नहीं, बल्कि एक ऐसा निवेश मंच होगा इसके जरिए अमेरिकी, खाड़ी और दुनिया भर की कंपनियां तथा निवेशक ईरान में पैसा लगाएंगे। यह पैसा सीधे ईरानी सरकार के खाते में नहीं जाएगा, बल्कि निवेश के रूप में आएगा।

इस प्रस्तावित फंड में सिर्फ अमेरिकी ही नहीं, बल्कि खाड़ी देशों, एशिया (जैसे दक्षिण कोरिया, जापान, सिंगापुर, मलेशिया), अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के निवेशक भी रुचि दिखा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, 300 अरब डालर में से आधे से अधिक राशि के लिए पहले ही शुरुआती कमिटमेंट मिल चुकी है, जो दिखाता है कि यह सिर्फ कागजी योजना नहीं बल्कि एक वास्तविक आर्थिक ढांचा तैयार करने की कोशिश है। जंग के दौरान ईरान के कई अहम औद्योगिक और रणनीतिक ठिकानों, जैसे रिफाइनरियों, हवाई अड्डों और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा था। इसी वजह से तेहरान शुरू में अमेरिका से करीब 400 अरब डालर के मुआवजे की मांग कर रहा था। अमेरिका सीधे मुआवजा देने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए बीच का रास्ता निकालते हुए मुआवजे की जगह निवेश का माडल पेश किया।

भले ही अमेरिका विकास और निवेश फंड कह रहा हो, ईरान के कई अधिकारी अप्रत्यक्ष मुआवजे के तौर पर देख रहे हैं, क्योंकि पैसा युद्ध में क्षतिग्रस्त ढांचे के पुनर्निर्माण में ही इस्तेमाल होगा। इस 300 अरब डालर से ईरान अपनी दशकों पुरानी ऊर्जा तकनीकों को आधुनिक बना सकता है, नए रेलवे नेटवर्क, बंदरगाह और हवाई अड्डे विकसित कर सकता है, तथा युद्ध में तबाह हुई कनेक्टिविटी को बहाल कर सकता है। ईरान के पास दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार और चौथा सबसे बड़ा तेल भंडार है, जिसका वह पूरी क्षमता से इस्तेमाल कर सकेगा।

इस 300 अरब डालर के निवेश फंड से अलग, ईरान के विदेशों में फंसे करीब 24 अरब डालर के सरकारी फंड को भी जारी करने पर सहमति बनी है, जिसमें से आधी राशि अंतिम बातचीत से पहले ही मिल सकती है। हालांकि, सबसे बड़ी बात यह है कि 300 अरब डालर का यह फंड अभी एक प्रस्तावित ढांचा है और यह तुरंत शुरू नहीं होगा। ईरान को समझौते की शर्तों का पालन करना होगा, जिसमें अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करना, संवर्धित यूरेनियम के भंडार को खत्म करना और अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण स्वीकार करना शामिल है। यदि ऐसा नहीं होता है, तब पूरी योजना खतरे में पड़ सकती है। पिछले चार दशकों में ईरान को वैश्विक पूंजी बाजारों तक इतनी बड़ी पहुंच शायद ही कभी मिली हो। यदि यह योजना सफल होती है, तब ईरान न केवल युद्ध से हुए नुकसान की भरपाई कर सकेगा, बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था को भी एक नई दिशा दे सकता है। फिलहाल, सभी की निगाहें शुक्रवार पर टिकी हैं, जब अमेरिका-ईरान के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर होने हैं, जो ईरान की अर्थव्यवस्था के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हो सकता है।

एंडी बर्नहम : कीर स्टार्मर के उत्तराधिकारी और ब्रिटेन के संभावित अगले प्रधानमंत्री

लंदन

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने मंगलवार को अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की, इसके बाद देश के राजनीतिक गलियारों में खलबली मची है। बीते दस वर्षों में यह सातवें ब्रिटिश प्रधानमंत्री का इस्तीफा है, जो देश की अस्थिर राजनीतिक स्थिति को दिखाता है। रिपोर्टों के अनुसार, स्टार्मर पर इस्तीफा देने का दबाव उनके ही वरिष्ठ मंत्रियों, खासकर विदेश सचिव येवेट कूपर की ओर से आ रहा था, जिन्होंने निजी तौ पर पद छोड़ने के लिए कहा था। इससे पहले, रक्षा मंत्री जान हीली ने डिफेंस बजट में कटौती का आरोप लगाकर स्टार्मर सरकार से इस्तीफा दे दिया था। इस राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, सत्तारूढ़ लेबर पार्टी के वरिष्ठ नेता एंडी बर्नहम का नाम अगले प्रधानमंत्री पद के प्रबल दावेदार के रूप में सामने आया है।

बर्नहम ब्रिटेन की लेबर पार्टी के एक प्रमुख नेता हैं और 2017 से ग्रेटर मैनचेस्टर के मेयर के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। जनवरी 1970 में लिवरपूल में जन्मे बर्नहम उत्तर-पश्चिम इंग्लैंड में पले-बढ़े और महज 15 साल की उम्र में उन्होंने लेबर पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी साहित्य की पढ़ाई करने के बाद, उन्होंने 2001 में पहली बार सांसद के रूप में चुनाव जीता। अपने राजनीतिक करियर में, बर्नहम ने पूर्व प्रधानमंत्रियों टोनी ब्लेयर और गार्डन ब्राउन की लेबर सरकारों के तहत कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है। 2008 में उन्हें ब्रिटेन का कल्चर सेक्रेटरी नियुक्त किया गया, जिसके बाद 2009 में उन्हें हेल्थ सेक्रेटरी के पद पर पदोन्नत किया गया। इस दौरान उन्होंने इंग्लैंड की प्रतिष्ठित नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) के प्रभारी के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बर्नहम महत्वाकांक्षी नेताओं में से एक रहे हैं और उन्होंने पहले भी दो बार लेबर पार्टी का नेता बनने का प्रयास किया था। 2010 में वे एड मिलिबैंट से हार गए, और 2015 में उन्हें जेरेमी कार्बिन के खिलाफ भी हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, ऐसी प्रबल संभावना है कि इस बार वे पार्टी के नेता का चुनाव जीत सकते हैं, जिससे उनके प्रधानमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त होगा। ग्रेटर मैनचेस्टर के मेयर के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने सार्वजनिक परिवहन, आवास और रोजगार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है, जिसकी व्यापक सराहना हुई है।

वैज्ञानिकों के बीच नई बहस छेड़ी ड्रैगन मैन की खोपड़ी ने

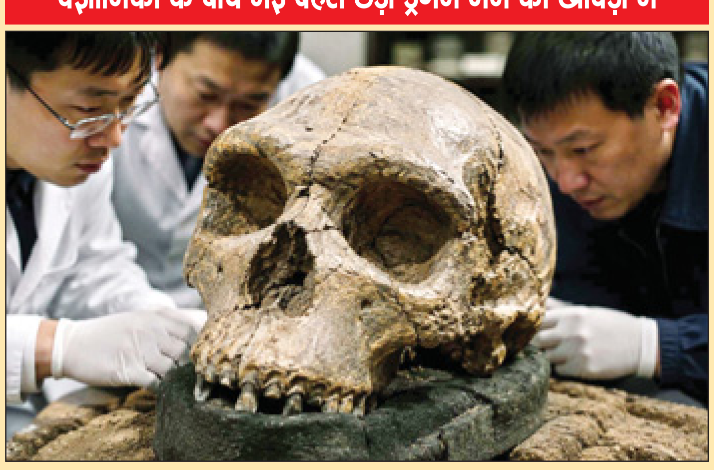

बीजिंग। पडोसी देश चीन में मिली एक प्राचीन मानव खोपड़ी ने मिली है जिसकी वजह से मानव विकास के इतिहास को लेकर वैज्ञानिकों के बीच नई बहस छिड गई है। लगभग डेढ़ लाख वर्ष पुरानी मानी जा रही इस विशाल खोपड़ी को वैज्ञानिकों ने ड्रैगन मैन नाम दिया है। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह खोज मानव विकास की उन कड़ियों को समझने में मदद कर सकती है, जिनके बारे में अब तक बहुत कम जानकारी उपलब्ध थी। इसकी संरचना आधुनिक मानव और अन्य प्राचीन मानव प्रजातियों दोनों से मिलती-जुलती दिखाई देती है, जिससे यह जीवाश्म विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन गया है। इस खोपड़ी की कहानी भी बेहद रोचक है। वर्ष 1933 में चीन के हार्बिन क्षेत्र में सोंगहुआ नदी के किनारे निर्माण कार्य के दौरान एक मजदूर को यह खोपड़ी मिली थी। उस समय क्षेत्र जापानी नियंत्रण में था, इसलिए उसने इस दुर्लभ अवशेष को सुरक्षित रखने के लिए एक कुएं में छिपा दिया। कई दशकों तक यह खोपड़ी दुनिया की नजरों से दूर रही। बाद में 2018 में मजदूर के परिवार ने इसे बाहर निकाला और वैज्ञानिकों को सौंप दिया। इसके बाद विशेषज्ञों ने विस्तृत अध्ययन शुरू किया, जिसके परिणामों ने वैज्ञानिक समुदाय को चौंका दिया।

पाक के पूर्व राजनयिक अब्दुल बासित ने माना भारत के एस-400 डिफेंस सिस्टम का लोहा

लाहौर

भारत और पाकिस्तान के बीच सामरिक संतुलन को लेकर पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त अब्दुल बासित का बड़ा बयान सामने आया है, जिसने पाकिस्तानी सेना के दावों को पूरी तरह खारिज किया है। पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त बासित ने खुले तौर पर माना है कि भारत की हवाई सुरक्षा में तैनात रूसी निर्मित एस-400 ट्रायम्फ एयर डिफेंस सिस्टम बेहद शानदार और अचूक है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी ही सरकार और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर को आगाह कर माना कि पाकिस्तान के पास फिलहाल इस अत्याधुनिक रूसी रक्षा प्रणाली की काट या इसका मुकाबला करने की कोई ठोस क्षमता मौजूद नहीं है।

अब्दुल बासित का बयान इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मई 2025 में दोनों देशों के बीच हुए चार दिनों के सैन्य संघर्ष की हकीकत को बयां करता है। उस झड़प के बाद से ही पाकिस्तानी सेना यह ढिंढोरा पीट रही थी कि हमारी सेना ने भारतीय वायु सीमा की सुरक्षा को भेद कर युद्ध में बढ़त बना ली थी। लेकिन पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त बासित ने कबूल किया कि आपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना के एस-400 सिस्टम ने बेहतर प्रदर्शन कर पाकिस्तानी मंसूबों को नाकाम किया। उन्होंने चेताया कि पाकिस्तानी सेना को अब अपनी कमियों को छिपाने वाले खोखले दावों से बाहर निकलना चाहिए और अपने खुद के एयर डिफेंस को मजबूत करने पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। सामरिक दृष्टिकोण से भारत ने साल 2018 में रूस के साथ 5.43 अरब डालर में पांच एस-400 मिसाइल बैटरियों की खरीद का सौदा किया था। इसमें से अधिकांश बैटरियां भारतीय सेना को मिल चुकी हैं और इसकी अंतिम खेप भी इसी साल के अंत तक भारत पहुंचने की उम्मीद है। इस सिस्टम के जबरदस्त प्रदर्शन को देखकर भारत सरकार अब रूस से ऐसी पांच और अतिरिक्त बैटरियां खरीदने की योजना पर विचार कर रही है। एस-400 ट्रायम्फ की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली बहुस्तरीय प्रणाली है, जो 600 किलोमीटर दूर से ही दुश्मन के लड़ाकू विमानों, ड्रोन, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों को ट्रैक कर सकती है और उन्हें 400 किलोमीटर के दायरे में ही हवा में ध्वस्त करने की क्षमता रखती है।

समय से पूर्व यूरोप में पड रही रिकार्ड तोड़ गर्मी, कई इलाकों में हाई अलर्ट

पेरिस

गर्मियों के मौसम की शुरुआत से पहले ही पश्चिमी यूरोप इस साल दूसरी बार एक भयानक हीटवेव की चपेट में आ गया है, जिससे इंग्लैंड से लेकर फ्रांस और जर्मनी तक के लोग एक साथ तपती गर्मी का सामना कर रहे हैं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि इस हफ्ते गर्मी से कोई राहत नहीं मिलने वाली है, और जून के महीने में इस तरह का तापमान देखकर हर कोई हैरान है। मौसम विभाग ने कई इलाकों में हाई अलर्ट जारी किया है, और फ्रांस में हालात सबसे ज्यादा खराब नजर आ रहे हैं, जहाँ तापमान 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है। जर्मनी और इंग्लैंड में भी रिकार्ड तोड़ने वाली गर्मी पड़ रही है। इस खतरनाक मौसम के पीछे एक खास तरह का वैज्ञानिक कारण, जिसे हीट डोम कहा जाता है, काम कर रहा है। फ्रांस की मौसम एजेंसी ने अपने 60 विभागों में आरेंज अलर्ट जारी किया है, जो उनका दूसरा सबसे बड़ा अलर्ट है। 21 जून से कुछ इलाकों में इसे रेड अलर्ट में भी

बदला जा सकता है। फ्रांस में हीटवेव को कैनिकल कहा जाता है, जिसका मतलब खतरनाक गर्म दिनों और रातों का दौर होता है। एजेंसी का अनुमान है कि 22 जून का दिन सबसे खराब हो सकता है, जब तापमान 37 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। यह फ्रांस के इतिहास में जून का सबसे गर्म दिन बन सकता है। इंग्लैंड में भी गर्मी से हालात काफी खराब हो गए हैं, जहाँ के मेट आफिस ने दक्षिणी इंग्लैंड के लिए अंबर एक्सट्रीम हीट वार्निंग जारी की है। यह चेतावनी 22 और 23 जून के लिए है, और वहाँ तापमान 34 डिग्री तक पहुँच सकता है, जो साल 1976 में बने 35.6 डिग्री के रिकार्ड के बहुत करीब है। जर्मनी में राष्ट्रीय मौसम सेवा ने लगभग पूरे देश के लिए चेतावनी दी है, जिसमें दक्षिण-पश्चिम इलाके में तापमान 38 डिग्री तक पहुँचने की आशंका है। मौसम विभाग ने बताया है कि इस भयंकर गर्मी के बाद भारी बारिश और ओले भी गिर सकते हैं, और इसके साथ ही खतरनाक तूफान आने की भी आशंका जताई गई है। इस पूरी समस्या के पीछे हीट डोम का हाथ है, जिसे आप एक उबलते बर्तन पर रखे ढक्कन की तरह समझ सकते हैं। इसमें हाई प्रेशर का एक बहुत बड़ा एरिया महाद्वीप के ऊपर ठहर जाता है और हिलने का नाम नहीं लेता। इसके अंदर हवा धीरे-धीरे नीचे की तरफ बैठती है। नीचे आते समय हवा सिकुड़ती है और गर्म हो जाती है, यह बिलकुल साइकिल पंप की तरह काम करता है जो दबाने पर गर्म हो जाता है। नीचे की तरफ आती हवा बादलों को भी पूरी तरह बिखेर देती है, जिससे सूरज की तेज किरणें सीधे जमीन पर पड़ती हैं। ढक्कन की तरह काम करने वाले इस प्रेशर के कारण गर्मी एक ही जगह जमा होने लगती है। सहारा रेगिस्तान से उत्तर की तरफ आने वाली गर्म हवा हालात को और ज्यादा बिगाड़ देती है। परेशानी सिर्फ दोपहर तक ही सीमित नहीं है, विशेषज्ञ ट्रापिकल रातों की चेतावनी भी दे रहे हैं, इन रातों में तापमान कभी 20 डिग्री से नीचे नहीं जाता। इंसान के शरीर को दिन की गर्मी से उबरने के लिए ठंडी रातों की जरूरत होती है, और जब यह राहत नहीं मिलती है तो शरीर पर काफी दबाव पड़ता है। ऐसे में बुजुर्गों और बीमार लोगों को सबसे ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ती है। यूरोप के आसपास के समुद्र भी काफी गर्म हो चुके हैं, जिससे तटीय इलाकों में रातें बहुत उमस भरी हो गई हैं।